डी०एल०एड्० II - year - S-2

Date : 08/06/2020

Page No :

पावलाव का सम्बद्ध प्रतिक्रिया सिद्धान्त —

सम्बद्ध प्रतिक्रिया सिद्धान्त का प्रतिपादन रूसी शरीर शास्त्री आई पी० पावलाव ने किया था इस मत के अनुसार सीखना एक अनुकूलित क्रिया है। बर्नार्ड के शब्दों में अनुकूलित अनुक्रिया उत्तेजना की पुनरावृत्ति द्वारा स्वाचालन है जिसमें उत्तेजना पहले किसी विशेष अनुक्रिया के साथ लगी रहती है। और वह किसी व्यवहार का कारण बन जाती है।

सिद्धान्त का अर्थ —

भोजन देखकर कुत्ते के मुंह से लार टपकने लगती है। यहाँ भोजन एक स्वाभाविक उत्तेजक या उद्दीपक है और कुत्ते के मुँह से लार टपकना एक स्वाभाविक क्रिया या सहज क्रिया है, पर यदि किसी अस्वाभाविक उत्तेजक के कारण भी कुत्ते के मुँह से लार टपकने लगे तो इसे सम्बन्ध सहज क्रिया या सम्बद्ध प्रतिक्रिया कहते हैं।

Date : 11
Page No :

पावलाव का प्रयोग —

सम्बन्ध सहज क्रिया के सिद्धान्त का सम्बन्ध शरीर विज्ञान से है। इसके मानने वाले विशेष रूप से व्यवहार वादी है उनका कहना है कि सीखना एक प्रकार से उद्दीपक और प्रतिक्रिया का सम्बन्ध है इस विचार को सत्य सिद्ध करने के लिए रूसी मनोवैज्ञानिक पावलाव ने कुत्ते पर एक प्रयोग किया उसने कुत्ते को भोजन देने से पहले कुछ दिनों तक घण्टी बजायी उसके बाद उसने भोजन न देकर केवल घण्टी बजायी तब भी कुत्ते के मुँह लार टपकने लगी। इसका कारण यह था कि कुत्ते ने घण्टी से यह सीख लिया था कि इसे भोजन मिलेगा। घण्टी के कुत्ते के प्रतिक्रिया को पावलाव ने सम्बन्ध सहजक्रिया की संज्ञा दी।

Scanned with CamScanner